शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

जयद्रथ - वध

कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

सुत-घातकों को देखते ही पार्थ मानो जल उठे,
मुख मार्ग से क्या क्लेष ही तो वे वहाँ न उगल उठे॥
"आचार्य! मेरा हस्त कौशल देख लेना फिर कभी,
अभिमन्यु का बदला तुम्हें लेकर दिखाना है अभी।"
इस भाँति बातों में समर का श्रीगणेश, हुआ जहाँ,
होने लगा तत्काल ही अति-तुमुल कोलाहल वहाँ।
ज्यों नीर बरसाते जलद करते हुए गुरु गर्जना।
लड़ने लगे दोनों प्रबल-दल कर परस्पर तर्जना॥

भावार्थ

अर्जुन गुरु द्रोणाचार्य की बातों का उत्तर देते हुए कहते हैं कि अभिमन्यु को मारने वाले को देखकर मैं जल उठा परन्तु मैं अपने भीतर की उस आग को मुख मार्ग से प्रकट नहीं किया। इसके पश्चात् अर्जुन कहते हैं कि हे आचार्य मेरा हस्त कौशल फिर कभी देख लेना। अभी तो मुझको तुम अभिमन्यु का बदला लेकर दिखाने दो।

इस प्रकार आचार्य और शिष्य के वार्तालाप से युद्ध आरम्भ हो गया। वहाँ उसी समय से भयंकर कोलाहल होने लगा। जिस प्रकार जल बरसाते हुए मेघ भयंकर रूप से गर्जना कर उठते हैं उसी प्रकार दोनों प्रबल दल एक दूसरे को डराते-धमकाते हुए लड़ने लगे।

राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से जहाँ अर्जुन के आक्रोश का विस्तार से वर्णन किये हैं वहाँ दोनों पक्षों के बीच भयंकर युद्ध का भी दर्शन कराते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद 1.11.20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सँ० महाविद्यालय सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
'निबंधमाला'

Date ——— Page ———

शीर्षक- गाँधीजी और माँ
लेखक- पंडित रामनन्दन मिश्र

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न:- सन् 1947 में गाँधीजी के पटना प्रवास के दौरान लेखक का परिचय किस प्रकार कराया गया?

उत्तर:- सन् 1947 में महात्मा गाँधीजी पटना प्रवास के दौरान डॉ० महमूद की कोठी पर ठहरे हुए थे। गाँधीजी के साथ बहुत सारे ऐसे लोग थे जो रामनन्दनजी को नहीं पहचानते थे। मृदुला साराभाई ने गाँधीजी से लेखक का परिचय कराते हुए कहती हैं ये बिहार सोशलिस्ट पार्टी के प्रधानमंत्री हैं। यह सुनकर गाँधीजी हँस पड़े। मीठे स्वरों में मृदुला साराभाई की भर्त्सना की और बोले- मृदुला यह तो मेरा रामनन्दन है। सोशलिस्ट पार्टी की पूँछ लगाकर तुमने इसकी कोई इज्जत नहीं बढ़ाई। वस्तुतः पंडित रामनन्दन मिश्रजी का गाँधीजी से काफी पुराना परिचय था। वे अच्छी तरह से रामनन्दनजी जानते-पहचानते थे।

प्रश्न:- लेखक से गाँधीजी कौन सी अन्तरंग बातें करना चाहते थे?

उत्तर:- लेखक के जीवन में गाँधीजी का काफी महत्व था। वे एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि बापू की जघन्य हत्या के कुछ ही दिन पूर्व मेरी मुलाकात गाँधीजी से हुई थी। गाँधीजी लेखक महोदय से कुछ अन्तरंग बातें करना चाहते थे। दूसरे दिन पाँच बजे समय निर्धारित हुआ। दूसरे दिन मिश्रजी निर्धारित समय पर पहुँच गये, लेकिन बापूजी पोलैण्ड के ~~एक~~ एक प्रतिनिधिमण्डल के साथ निकल रहे थे। उन्होंने मिश्रजी को देखा तो वे लौट पड़े। डायरी देखी। यह समय तो रामनन्दनजी के साथ बाहर टहलने का था। बापू को दुःख हुआ कि उनके इस कार्यक्रम में किसने हेर-फेर कर दिया। इन दिनों घनश्यामदास बिड़ला उनका कार्यक्रम बनाया करते थे। बापूजी ने बिड़लाजी को हिदायत दी ~~थी~~ कि बिना उनकी राय लिये बिना कार्यक्रम मे कोई हेर-फेर न किया जाए।

बापू को अपनी पोती राधाबाई की प्रेमनिष्ठा की

शेष आगे-

कहानी रामनन्दन जी से कहनी थी। उन्होंने बताया कि किस तरह श्यामाबाई और दीपक चौधरी की जब शादी होने ही वाली थी कि दीपक एकाएक बैरिस्ट्री की डिग्री लेने विलायत चला गया। वहाँ से आने के बाद दोनों की शादी सम्पन्न हुई।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 1.10.20
रा०कृ० सं० महावि० खुरखसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
दिगंत- भाग-2 - पद्य खण्ड
शीर्षक — 'कवित्त'

कवि - भूषण

सप्रसंग व्याख्या:-

"पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विगराज हैं।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के भूषण के 'कवित्त' शीर्षक पाठ से ली गई है।इन पंक्तियों में छत्रपति शिवाजी के प्रखर, तेजस्वी व्यक्तित्व का गुणगान किया गया है। यह प्रसंग शिवाजी की सुकृतियों से संबंधित है।

प्रस्तुत पंक्तियों में महाकवि भूषण कहते हैं जिस प्रकार पवन बादलों को तितर-बितर कर देता है, जिस प्रकार भगवान शिव कामदेव पर अधिकार कर लेते हैं जिस प्रकार परशुराम सहस्रार्जुन पर विजय पा लेते हैं, ठीक उसी प्रकार शिवाजी भी अपने शत्रु पर विजय पा लेते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि, पवन, भगवान-शिव, परशुराम के व्यक्तित्व के समान ही हमारे राष्ट्र नायक छत्रपति शिवाजी का व्यक्तित्व है।

उपरोक्त पंक्तियों में महाकवि भूषण ने, पवन, भगवान शिव एवं परशुराम आदि के गुणों से सम्पन्न छत्रपति शिवाजी के चेतना सम्पन्न व्यक्तित्व की प्रशंसा की है। वस्तुतः शिवाजी में देवत्व है, तेजस्विता है, प्रखरता है, शौर्य है और आत्म गौरव भी है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 1/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कु०सं० महावि० गुरखसेना, पूर्णियाँ